The Academic
International Journal of Multidisciplinary Research

An Online Peer Reviewed / Refereed Journal
Volume 3 | Issue 12 | December 2025
ISSN: 2583-973X (Online)
Website: www.theacademic.in

वैश्विक मानव शक्ति के रूप में भारतीय ज्ञान परंपरा: एक विश्लेषणात्मक अध्ययन

डॉ. ज्योति पाण्डेय

सहायक अध्यापक, यू.पी. बेसिक शिक्षा विभाग

लक्ष्मी मिश्रा

शोध अध्येत्री, शिक्षा विभाग, दयानन्द एंग्लो वैदिक स्नातकोत्तर महाविद्यालय सम्बद्ध छत्रपति शाहू जी महाराज वि0वि0, कानपुर नगर (उ0प्र0), E-mail: lakshmi_phd21_edu@csjmu.ac.in

DOI : https://doi.org/10.5281/zenodo.18258623

ARTICLE DETAILS

Research Paper

Accepted: 29-12-2025

Published: 10-01-2026

Keywords:

भारतीय ज्ञान परंपरा, मानव शक्ति, आधुनिकरण, सांस्कृतिक मूल्य, विश्वगुरु

ABSTRACT

भारतीय सभ्यता विश्व की पुरातन सभ्यताओं में एक है यहाँ की ज्ञान परंपरा अद्वितीय ज्ञान और प्रज्ञा का प्रतीक है , जिसमें आध्यात्मिक ज्ञान और नैतिक मूल्यों का समावेश है। भारतीय ज्ञान प्रणाली में मानव के समग्र विकास की संभावना विद्यमान हैं, जिसका ध्येय समाज, राष्ट्र और विश्व का सामंजस्यपूर्ण रूप से एकीकरण एवं पोषण करता है। भारतीय ज्ञान ने विभिन्न मानव कल्याणकारी क्षेत्रों में कीर्तिमान स्थापित कर मानव शक्ति के उत्थान में महत्वपूर्ण योगदान दिया है। आधुनिक ज्ञान, व तकनीक और अनेक प्रौद्योगिकी उपलब्धियां पुरातन भारतीय ज्ञान की ही देन हैं। आधुनिकरण के बदलते परिवेश में मानव अपने मूल्यों को भूलता जा रहा हैं अत्यधिक तकनीकीकरण से संस्कृति के विकृतम रूप को धारण कर रहा है ऐसे में भारतीय मूल्यों के बीच शिक्षा प्रणाली को समावेशी बनाना अत्यंत आवश्यक हो गया है और यह समावेशन, भारतीय प्राचीन ज्ञान परंपरा के बिना कर पाना असंभव है क्योंकि मानव जहाँ भारतीय ज्ञान की देन विज्ञान, तकनीक का प्रयोग कर आधुनिकता की दौड़ में तेजी से अग्रसर है, वही हमारी संस्कृति में निहित मानव मूल्यों को भूलता जा रहा हैं। भारत ज्ञान की भूमि है जो विश्वगुरू से अलंकृत है, जो विश्व की समस्त ज्ञान प्रेमियों का विशेष आकर्षण है। वर्तमान समय में भी संपूर्ण विश्व भारतीय ज्ञान परंपरा का

अनुकरण कर रहा है, विश्व के कई देशों में भारतीय वेदों, उपनिषद् यहाँ तक कि रामायण और भागवत गीता को पाठ्यक्रम में शामिल किया जा रहा है जो आधुनिक मानव की कुंठित संस्कृति को पुनर्जीवित कर फिर से मानव शक्ति का उत्थान करेगा। यह शोध पत्र दो उद्देश्यों पर आधारित है प्रथम प्राचीन भारतीय ज्ञान परंपरा की आधुनिक विश्व के संदर्भ में उपादेयता सिद्ध करना तथा भारतीय ज्ञान परंपरा का विश्व मानव शक्ति के संदर्भ में विश्लेषण करना।

प्रस्तावना:

मनुष्य स्वभाव से ही अद्वितीय क्षमताओं के साथ ज्ञान उत्पन्न करने वाला प्राणी है। भारतीय ज्ञान प्रणाली एक उच्चतम चरण है जिसमें पुरातत्व आयुर्वेद और चिकित्सा, ज्योतिष, खगोल विज्ञान, लोक प्रशासन, अर्थशास्त्र इत्यादि जैसी सभी चीजें शामिल है। भारतीय ज्ञान परंपरा केवल पैतृक ज्ञान को जानने के बारे में नहीं है, बल्कि आर्थिक, सामाजिक और वैश्विक विकास की विशिष्टता की पहचान करती है। "भारतीय ज्ञान" और "वैश्विक मानव" शक्ति शब्द परस्पर संबंधित शब्द हैं, अब तक हम मैकाले की अंग्रेजी शिक्षा प्रणाली का अनुसरण कर रहे हैं, हमने खुद को अपनी जड़ों से अलग कर लिया है जो बहुत समस्याग्रस्त हो गया है। शिक्षा में भारतीय ज्ञान प्रणालियों के एकीकरण की अपार संभावनाएं हैं। शिक्षार्थियों के बीच समग्र विकास को बढ़ावा देना एवं पारंपरिक दृष्टिकोण के विपरीत ज्ञान को अलग-अलग खंडों में बांटकर, भारतीय ज्ञान प्रणालियाँ परस्पर संबद्ध एवं समृद्ध ज्ञान प्रदान करती हैं (Baral,2024) । राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 भारत के समृद्ध और शाश्वत ज्ञान के ऐतिहासिक खजाने को इंगित करती है। भारतीय ज्ञान प्रणाली को वैज्ञानिक माना जाता है जिसमें आदिवासी ज्ञान और सीखने के स्वदेशी और पारंपरिक तरीके शामिल हैं। इसका उद्देश्य गणित, खगोल विज्ञान, दर्शन, योग, वास्तुकला, चिकित्सा, कृषि आदि जैसे विषयों को शामिल करना है। फोकस के अन्य प्रमुख क्षेत्रों में आदिवासी नृजातीय-चिकित्सा पद्धतियां, वन प्रबंधन, प्राकृतिक खेती आदि शामिल हैं। परंपरा में 18 प्रमुख विद्याओं या सैद्धांतिक विषयों का उल्लेख है एवं 64 कलाओं, अनुप्रयुक्त या व्यावसायिक विषयों, शिल्प का उल्लेख है। 18 विद्याएँ हैं, चार वेद, चार सहायक वेद (आयुर्वेद) चिकित्सा, धनुर्वेद, शस्त्र विद्या, गंधर्ववेद, संगीत और शिल्प, वास्तुकला), पुराण, न्याय, मीमांसा, धर्मशास्त्र और वेदांग, छह सहायक विज्ञान, ध्वनिविज्ञान, व्याकरण, खगोल विज्ञान, अनुष्ठान और भाषाशास्त्र ये प्राचीन भारत में 18 विज्ञानों का आधार बने। जो भविष्य की पीढ़ियों की अपनी ज़रूरतों को पूरा करने की क्षमता से समझौता किए बिना वर्तमान की ज़रूरतों को संबलता प्रदान करती हैं। भारतीय ज्ञान परंपरा मानव को वैश्विक और मानवीय प्रगति से परिपोषित करती है। भारत की आध्यात्मिक और सांस्कृतिक एकता का स्रोत भारतीय ज्ञान परंपरा है जो वैश्विक मानव शक्ति की विभिन्न धाराओं को आकार देने में पथ प्रदर्शक की भांति

कार्यरत है। वैश्विक मानव शक्ति एकजुट होकर राष्ट्र के विकास का मार्ग प्रशस्त करती है। भारतीय ज्ञान परंपरा मानव की सहज समग्रता को एकीकृत करके परिभाषित करती है। भारतीय ज्ञान परंपरा एक गतिशील, निरंतर विकसित होने वाली परंपरा है जो समृद्धि, विविधता को समाहित करती है। भारतीय ज्ञान परंपरा भारतीय लोगों की अविष्कारशीलता है। वर्तमान समय में भारतीय ज्ञान परंपरा को दरकिनार कर इसका अवमूल्यन किया गया है, और बड़ी संख्या में भारतीय खुद को इससे अलग-थलग महसूस करते हैं। भारतीय ज्ञान परंपरा बौद्धिक एवं सांस्कृतिक इतिहास को आपस में जोड़ते हुए एक विकसित, समावेशी और टिकाऊ समाज के निर्माण में अग्रसर है (THAKKAR, 2024) ।

चेतन परम पूज्य महर्षि महेश योगीजी ने हमेशा कहा है कि "चेतना ही जीवन की मूल प्रेरक शक्ति है", ज्ञान चेतना में ही संरचित है। वर्तमान शिक्षा प्रणाली में सारा जोर वस्तुनिष्ठ जानकारी प्रदान करने के विभिन्न तरीकों पर है, जबकि शिक्षार्थी की चेतना को विकसित करने और ज्ञान के रिसेप्टर्स, बुद्धि और इंद्रियों को अधिक मन-शरीर समन्वय के साथ तेज करने के लिए बहुत कुछ नहीं किया जाता है। नीति का उद्देश्य शिक्षार्थियों में भारतीय होने का गर्व पैदा करना है, न केवल विचारों में, बल्कि भावना, बुद्धि और कर्मों में भी, साथ ही ज्ञान, कौशल, मूल्य और स्वभाव विकसित करना है जो मानवाधिकारों, सतत विकास और जीवन और वैश्विक कल्याण के प्रति जिम्मेदार प्रतिबद्धता का समर्थन करते हैं, जिससे वास्तव में वैश्विक नागरिक की छवि बनती है। 29 जुलाई 2020 को जारी राष्ट्रीय शिक्षा नीति-2020 एक महत्वाकांक्षी दस्तावेज है जो भविष्यगत दृष्टि रखते हुए, समय के मांग के अनुरूप शिक्षा के सभी पहलुओं पर बात करती है (Das,2024) ।

पूर्व में किए गए अध्ययन

1- मन्दावकर, पवन (2023) ने **'इंडियन नॉलेज सिस्टम'** पर अध्ययन किया और पाया कि देश की समृद्ध विरासत एवं पारंपरिक ज्ञान की सक्रियता के साथ-साथ समकालिक सामाजिक मुद्दों का समाधान करने में भारतीय ज्ञान परंपरा उचित मार्ग प्रशस्त करती है (Mandavkar, 2023)।

2- खान, सलीम एवं शर्मा, मीता (2024) ने **'अन ओवरव्यू ऑन इंडियन नॉलेज सिस्टम'** पर अध्ययन किया और पाया कि भारतीय ज्ञान परंपरा एक नवोन्वेषी इकाई के रूप सामाजिक अनुप्रयोगों के लिए अंतःविषय अनुसंधान को बढ़ावा देने, ज्ञान को संरक्षित एवं प्रसारित करने का कार्य करती है (Khan & Sharma, 2024) ।

3-अमिटा, वी० एवं पाठक, डी ०(2022), ने '**भारतीय ज्ञान परंपरा और शोध** 'विषय पर अध्ययन किया और पाया कि भारतीय ज्ञान करम का मुख्य साधन है जिसमें ज्ञानियों और कारणों को समान मेहता दी गयी है तथा भारतीय ज्ञान अनुभव से सिद्धांत निर्माण और कर्म की पूरी प्रक्रिया में गतिमान है (अमित एवं पाठक, 2022)।

4-परिहार, सावित्री एवं चौहान, प्रभा (2024), ने "**प्राचीन भारतीय ज्ञान परंपरा और इतिहास** " अध्ययन के निष्कर्ष ने बताया कि भारतीय ज्ञान परंपरा आज प्रासंगिक है जो तनाव प्रबंधन , स्थिरता आदि के समाधान में व्यवहारिक ।प्राचीन भारतीय परंपरा ज्ञान का भंडार है जो मानवता के विकास में उपयोगी है (परिहार एवं चौहान, 2024) ।

5-गुप्त, आदित्य कुमार (2019), ने **भारतीय दर्शन एवं मानव कल्याण: एक अवलोकन** विषय पर अध्ययन किया और पाया कि भारतीय चिंतन के मूल में मानव कल्याण, विश्व कल्याण निहित हैं (गुप्ता, 2019) ।

अध्ययन के उद्देश्य:

1- भारतीय ज्ञान परंपरा का आधुनिक विश्व के संदर्भ में उपादेयता सिद्ध करना।

2- भारतीय ज्ञान परंपरा का विश्व मानव शक्ति के रूप में विश्लेषण करना।

भारतीय ज्ञान परंपरा:

भारतीय ज्ञान परंपरा के अंतर्गत गणित, खगोल विज्ञान, दर्शन, योग, वास्तुकला, चिकित्सा, कृषि, इंजीनियरिंग, भाषा विज्ञान, साहित्य, खेल, साथ ही शासन, राजनीति धर्म दर्शन पुराण वेद वेदांग आदि लौकिक एवं अलौकिक विषयों को समाहित किया गया है। भारतीय ज्ञान परंपरा दर्शन पर आधारित है जिस से वैज्ञानिक और व्यावहारिक चिंतन की उत्पत्ति हुई है, जो विश्व बंधुत्व की भावना से प्रेरित है तथा विश्व के समस्त समुदायों एवं मानव के कल्याण की भावना इसमें समाहित है इसलिए भारतीय ज्ञान आज भी प्रासंगिक है। आदिकाल से महाभारत तथा पुराण काल तक वैदिक धर्म दर्शन संस्कृति की धारा का निरंतर प्रवाह होता रहा। कालांतर में विदेशियों के आक्रमण के दौरान जहां भारत की धन संपत्ति को लूटा गया वहीं भारतीय ज्ञान परंपरा को अपनाते हुए विदेशी यात्रियों ने भारतीय ज्ञान, कला , संस्कृति को अपने वृतान्तो में शामिल किया तथा यहां शासन करने वाले तुर्को और मुगलों यहा तक अंग्रेजो ने भी संस्कृत के ग्रंथों का अपनी-अपनी भाषा में अनुवाद करके भरपूर उपयोग किया। भारतीय ज्ञान वेद, उपनिषद, ब्राहमण ग्रंथ, आरण्यक, वेदांग, रामायण, महाभारत जैसे ग्रंथ तथा कालिदास, तुलसीदास और जयशंकर प्रसाद जैसे रचनाकारों का साहित्य इसका संश्लेषण है। यहां की ज्ञान परम्परा का आरंभ सरस्वती तट पर विकसित वैदिक सभ्यता से होता है जो सबसे प्राचीनतम है। भारतीय आरंभ से ही ब्रहमांड व्यापी शांति की कामना करते हैं। भारतीय अवतारवाद से प्रभावित होकर ही डार्विन ने विकासवाद का सिद्धांत दिया। भारतीय ग्रंथों में वर्णित रामायण, महाभारत काल के अस्त्र- शस्त्रों से आधुनिक हथियार अतुलनीय हैं।

हमारी ज्ञान परंपरा के अलावा 'वसुधैव कुटुम्बकम ' का भाव और कहीं नहीं है। भारतीय संस्कृति में प्रेम एक आदर्श है जो मानव मे सहयोग, भाईचारे, शान्ति और सामंजस्य का भाव उत्पन्न करता है। हमारे यहाँ जो शून्य गणित में

एक अंक है वही दर्शन में अनुभूति का विषय बन जाता है। हम अंतकरण से बाहर को जोड़ते है और एक साथ उन्नयन चाहते हैं।

वैश्विक मानव शक्ति:

वैश्विक मानव शक्ति के रूप में भारतीय ज्ञान परंपरा एक व्यापक और बहुस्तरीय विषय है जिसके अंतर्गत भारतीय ज्ञान परंपरा के विभिन्न आयामों का विश्लेषण किया जा सकता है।

वेद और उपनिषद्

भारतीय परंपरा में वैदिक दर्शन समग्र मानवता के लिए अध्यात्म ज्ञान जो मानवीय सीमा से परे अखंड सृष्टि के कल्याण का संकल्प लेता है। वे जीवन के प्रत्येक पक्ष की व्याख्या करते हैं ऋग्वेद ने पशु पक्षियों के दृष्टान्त के द्वारा मानव को अपनी प्रवृत्ति को सुधारने की प्रेरणा दी गई है (7/104/22) , जिसमें कहा गया है कि मानव को पशु प्रवृत्ति का त्याग कर मानवता को अपनाने जरूर देना चाहिए। यजुर्वेद का पतन है कि प्रत्येक मनुष्य का कर्तव्य है कि वह एक दूसरे का सहयोग करें। वैदिक ज्ञान मानव कल्याण के लिए प्रेरित है अर्थवेद में संपूर्ण मानव जीवन के चार आश्रमों में विभाजित किया गया है जो मानव मूल्यों पर आधारित है। वैदिक ज्ञान में स्वास्थ्य चिंतन और शुभत्व की कामना की गयी है। भारतीय वेदों का मूल मंत्र वसुधैव कुटुम्बकम है जो मानव शक्ति के रूप में देखता है और विश्वबंधुत्व को बढ़ावा देते हैं जिसका अर्थ है संपूर्ण विश्व एक परिवार है और एक दूसरे की जिम्मेदार है। यह दर्शन भारतीय ज्ञान परंपरा का जो पांच आदर्श वाक्य बन गया है।

भारतीय दर्शन

भारतीय दर्शन में मानव जीवन का उद्देश्य मोक्ष प्राप्ति है। भारतीय परंपरा में मानव शक्ति का विकास कर मोक्ष के लिए प्रेरित किया गया है। भारतीय दर्शन का उद्देश्य केवल सत्य को जानना नहीं बल्कि जगत के वास्तविक स्वरूप का ज्ञान कराना हैं। सांख्य दर्शन मानव के त्रिगुण प्रवृत्ति में सामंजस्य स्थापित जीवन को श्रेष्ठ बनाने के लिए प्रयास करते हैं वही योग दर्शन मानव को यौगिक क्रियाएं द्वारा तथा न्याय विशेष इतर की माध्यम से मानव कल्याण के लिए प्रयास करता है। अर्थव्यवस्था मानव के समग्र विकास के लिए पंचकोश सिद्धांत का वर्णन करता है। यह सिद्धांत मानव शरीर और आत्मा की प्रकृति को स्पष्ट करता है। इसके अनुसार मानव कोशिका के संश्लेषण से बना है।

अन्नमय कोष : भौतिक शरीर

प्राणमय कोष : ऊर्जा आवरण

मनोमय कोष : मानसिक आवरण

विज्ञानमय कोष : बौद्धिक आवरण

आनंदमय कोष : आनंद प्राप्ति

भारतीय दर्शन इन पंचकोषों के माध्यम से मानव का समग्र विकास करने और विश्व को श्रेष्ठ बनाने में सहायक है। कालान्तर के बौद्ध व जैन दर्शन भी मानव कल्याण की भावना से ओतप्रोत है। सत्य, अहिंसा सरोकार जैसे नैतिक मूल्यों को प्राथमिकता देते हैं तथा स्ट्रांग मार्ग द्वारा मनुष्य को अनुशासित बनाता है। जैन दर्शन सत्य, अहिंसा, ब्रह्मचर्य जैसे श्रेष्ठ मूल्यों को स्थापित करता हैं एवं समयानुरूप बहुआयामी चिंतन करने में समर्थ बनाता है।

भारतीय प्राचीन विज्ञान तकनीक

भारतीय प्राचीन विज्ञान तकनीक आज के आधुनिक तकनीक की अग्रणी है ।आज तकनीकों को अनुप्रयुक्त विज्ञान के रूप में स्वीकार किया गया है लेकिन भारतीय ज्ञान परंपराओं में 2500 ईसा से पहले ही पत्थर के औजार विकसित हो चुकी थी। सबसे पहला डॉकहार्ड लोथल में पाया गया, भारतीय धातुविज्ञान भी बहुत उन्नत था। मेहरगढ़ में पहला धातु साक्ष्य मिला है। यहाँ बिना जंग लगने वाला लोहा के रूप में महरौली लोह स्तंभ है। वुड्स स्टील का निर्माण दक्षिण भारत में 300 वर्ष पूर्व में हुआ था। यह लोहे का एक रूप है जिसमें कार्बन का अनुपात अधिक होता है। आधुनिक समय में इसको बढ़ावा दिया जा रहा है क्योंकि इसमें सुपर प्लास्टिक के गुण पाए जाते हैं। यह भारत की एक अनोखी देन है। भारत में लुप्त तकनीक की वैक्स तकनीक 5000 वर्ष से भी पूर्व गोवा जिसका प्रयोग मूर्तिकला में किया जाता था। उदाहरण के लिए मोहनजोदड़ो की नृतक की मूर्ति, लुप्त मोम तकनीक से बनाई गयी थी। इस तकनीक में गर्म धातु को मोम मॉडल में डाला जाता था जिसमें मोम लुप्त हो जाता था। रसायन विज्ञान में भी भारत उन्नत था। बागभट्ट का रस रत्न,नागार्जुन ने पारे की व्याख्या अलग की ओर पारी को सिर्फ धातु ही नहीं बल्कि मानव की मुक्ति के लिए शरीर को स्वस्थ और मजबूत बनाए रखने के कारण भी माना है। भारतीय आयुर्वेद के अनुसार मानव शरीर पंच महाभूतों से बना है। भारतीय ज्ञान, ज्योतिष, आयुर्वेद के साथ साथ अंकगणित बीजगणित भी उन्नत था। आर्यभट्ट, वाहमिहिर आदि का नाम प्रसिद्ध हैं। शून्य, पाई का मान, दशमलव प्रणाली, त्रिकोणमिति, वैदिक गणित भारत की ही देन हैं इस प्रकार भारतीय ज्ञान विश्व मानव शक्ति की गौरव गाथा के रूप में वर्णित है।

योग और अध्यात्म

भारतीय ज्ञान परंपरा में योग का महत्त्व वर्तमान में भी प्रासंगिक है। अध्यात्म के माध्यम से ही मानव मुक्ति संभव है। भारतीय अध्यात्म मानवीय मूल्यों और नैतिक मूल्यों पर आधारित है जिसका उद्देश्य सत्य की खोज ही नहीं बल्कि आत्मसाक्षात्कार तथा ज्ञान,योग,अष्टांगिक मार्ग द्वारा मानव की मुक्ति है।

भारतीय कला तथा संस्कृति

प्राचीन भारतीय कला संस्कृति भी उत्कृष्टतम है जो मानव की विविध कलाओं को पोषित करते हैं। भारतीय भाषाएं वैज्ञानिक है। इसकी आवृत्ति मानव जीत और मन को स्वस्थ रखती है। भारत उत्सवों का देश है ,जहाँ विभिन्न प्रकार के नृत्य, संगीत तथा अतिथि सत्कार आदि विश्व भर को आकर्षित करते हैं अतः भारत की वर्तमान शिक्षा यहां की अनुपम कला और संस्कृति के संवर्धन के लिए कार्य करने पर बल देती है।(Bajpai, 2024,p 256)। यहाँ के नृत्य, संगीत, चित्रकारिता, मानव कल्याण की भावना से ओतप्रोत है। यहाँ की कला संस्कृति इतनी समृद्ध है कि विश्व के अनेक लोग यहाँ की संस्कृति पर शोध करने आते थे जिसकी प्रसांगिकता आज भी है, जो विश्व मानव शक्ति के रूप में आलोकित है।

आधुनिकरण:

द्वितीय विश्व युद्ध के पश्चात कई वर्षों में, पश्चिम और तीसरी दुनिया दोनों में आधुनिकीकरण को सामाजिक वैज्ञानिकों, योजनाकारों, राजनेता द्वारा स्वीकार किया गया था। इस 'स्कूल' के अंदर कई तरह के मतभेद थे। इसके अधिकांश अनुयायियों द्वारा इसकी कई अवधारणा सुझाई गई। आधुनिकीकरण के विश्लेषण की इकाई आमतौर पर राष्ट्र-राज्य और राष्ट्र थे। तीसरी दुनिया को विकासवादी पैमाने पर रखा गया था। आधुनिकीकरण पश्चिमी देशों की सभ्यता विकास रहन-सहन को अपनाने की अनुशंसा पर बल देता है। जो सक्रिय रूप से अपने विकास के लिए आवश्यक सामग्रियों का प्रसार करना 'आधुनिक' मूल्य, प्रौद्योगिकी, विशेषज्ञता और पूंजी का समर्थन करता है। आधुनिकीकरण को तीसरी दुनिया का सक्रिय पश्चिमी-शिक्षित अभिजात वर्ग माना जाता था। आधुनिकीकरण विकास एवं प्रगति जैसी अवधारणा को समाहित करता है जिसमें वास्तविक एवं आदर्शीकृत बदलाव को शामिल किया गया है। आधुनिकीकरण की प्रवृत्ति पश्चिमीकरण की अवधारणा का अनुमोदन करती है। आधुनिकीकरण का समर्थन करते हुए कहा जाता है कि विकास के लिए 'मानवीय' दृष्टिकोण अच्छा है। आधुनिकीकरण 'मानव व्यक्तित्व की क्षमता का एहसास'को समाहित करता है। आधुनिकीकरण की सर्वोत्तम उपलब्धि है गरीबी, बेरोजगारी और असमानता को कम करके राष्ट्र को प्रगति के मार्ग पर अग्रसर करना है। आधुनिकीकरण नए-नए आविष्कारों, तकनीकियों तथा प्रति व्यक्ति आय में बढ़ोतरी के साथ-सा आत्मनिर्भरता जैसे मुख्य अवधारणा को समाहित करता है (Harrison, 2003) ।

सांस्कृतिक मूल्य:

मानव जीवन में मूल्य का विशेष महत्व है। ये मूल्य ही व्यक्ति के जीवन को गौरांवित या अपदस्थ करते हैं। मूल्य विहीन प्राणी का जीवन कपोल कल्पना मात्र है। सांस्कृतिक मूल्य व्यक्ति के वे विश्वास है जो उसके संपूर्ण व्यवहार और जीवन दर्शन का निर्धारण करते हैं। इन मूल्यों के अभाव में किसी भी राष्ट्र की प्रगति एवं विकास संभव नहीं है। सांस्कृतिक मूल्य हमारे परस्पर विश्वास की संरचना का प्रतिनिधित्व करते हैं। ये मूल्य ही हमारी सांस्कृतिक धरोहर का निर्माण करते हैं। यह सांस्कृतिक मूल्य हमारे जीवन का निर्धारण करते हैं एवं मानवीय और नैतिक कार्यों के लिए हमें प्रेरित करते हैं। इन्हीं के माध्यम से हमारा जीवन आदर्शों को अनुकरणीत करता है। कभी-कभी इन सांस्कृतिक मूल्यों के बीच में परस्पर द्वंद की भी संभावना विद्यमान रहती है। इन मूल्यों के बीच में परस्पर संघर्ष एवं अनुकूलता का विकास होना स्वाभाविक है। ऐसे ही कुछ साथ मूल्यों को बताया गया है। जो इस प्रकार है:

1. **रूढ़िवादिता:** स्वामित्व और आदेशित एवं परंपरागत कार्यों पर अंकुश के साथ-साथ यथास्थिति को बनाए रखने पर ध्यान केंद्रित करता है। समूह की एकजुटता और पारंपरिक व्यवस्था को बाधित कर सकता है। जैसे सामाजिक व्यवस्था, परंपरा के प्रति सम्मान, पारिवारिक सुरक्षा।

2. **बौद्धिक स्वायत्तता:** स्वतंत्र विचार और व्यक्ति के अपने लक्ष्य को आगे बढ़ाने के अधिकार, स्वयं की बौद्धिक दिशाएँ जैसे, जिज्ञासा, रचनात्मकता, व्यापक मानसिकता ।

3. **भावात्मक स्वायत्तता:** भावात्मक रूप से सकारात्मक अनुभवों की व्यक्तिगत खोज जैसे, आनंद, रोमांचक जीवन, विविध जीवन ।

4. **पदानुक्रम:** शक्ति भूमिकाओं और संसाधनों जैसे सामाजिक असमान वितरण की वैधता शक्ति, अधिकार, नम्रता, धन।

5. **समतावादी प्रतिबद्धता:** स्वार्थी हितों को उन हितों से ऊपर उठाना, जो सेवा प्रदान करते हैं सामान्य भलाई जैसे, समानता, सामाजिक न्याय, स्वतंत्रता, जिम्मेदारी और ईमानदारी।

6. **निपुणता:** आत्म-पुष्टि जैसे, महत्वाकांक्षा, सफलता, योग्यता के माध्यम से आगे बढ़ना।

7. **सद्भाव:** पर्यावरण में सामंजस्यपूर्ण ढंग रहने के लिए, प्रकृति के साथ एकता, पर्यावरण की रक्षा करना)। स्मिथ एवं शुट्ज जैसे मनोवैज्ञानिक ने माना है कि ये सांस्कृतिक मूल्यों के व्यावहारिक और सामाजिक परिणाम परस्पर विरोधी हो सकते हैं या दूसरे के अनुसरण का अनुकूल हो सकते हैं। सांस्कृतिक मूल्यों के उद्भव से देश के नागरिकों में अपने राष्ट्र के प्रति समर्पण एवं वसुधैव कुटुंबकम की भावना का विकास होता है। जो एक विकसित और समृद्ध

राष्ट्र के सुदृढीकरण को बढ़ावा देता है। जिस राष्ट्र में सांस्कृतिक स्वायत्तता का स्तर उच्चतम होता है उस राष्ट्र का सर्वोच्च विकास संभव है (Watson at al., 2002) ।

विश्वगुरु:

अनादि काल से ही भारत एक समृद्ध एवं विकसित देश रहा है। प्रत्येक विधा चाहे खगोलशास्त्र,भौतिकशास्त्र, चिकित्साशास्त्र, रसायनशास्त्र, गणितशास्त्र जैसी विधाओं के विशेष प्रकांड मनीषी और विद्वान मौजूद रहे हैं। कौटिल्य मुनि कहते हैं कि शिक्षित व्यक्ति में तीन चारित्रिक परिणाम आते हैं जैसे - विद्या- नवीन ज्ञान का सृजन, विवेक- सही ज्ञान को सही समय पर सही जगह उपयोग करने की क्षमता और विलक्षणता- वास्तविक जीवन में प्राप्त ज्ञान की उचित परिमाण के कौशल का होना। इन सभी विलक्षण प्रतिभाओं को शामिल करने के कारण ही भारत आज विश्वगुरु के रूप में मानवीय चेतना के चरम उत्कर्ष में प्रतिष्ठित है। भारत की संस्कृति में धर्म सम्मत परंपराओं का विशेष स्थान है। समाज और राष्ट्र को ज्ञान का मार्ग दिखाने के लिए ऋषि परंपरा आगे रही है इसीलिए भारत विश्वगुरु के रूप में जाना जाता है प्राचीन काल से लेकर आधुनिक समय तक अनेक नई-नई प्रौद्योगिकयों में भारत अग्रसर रहा है। भारत की ज्ञान परंपरा धातुशास्त्र, आयुर्वेद विज्ञान, रंगयोजना, वेद, वेदांग, उपनिषद, गणित, पर्यावरण, अनुसंधान सभी के समृद्ध ज्ञान को समाहित करती है। भारतीय ज्ञान संपदा विश्व के लिए सदैव उपलब्ध रही है गुरुकुल परंपरा से संपूर्ण विश्व के अलग-अलग देशों से आए विद्यार्थियों ने ज्ञान अर्जन किया विश्वगुरु होने के कारण यहां का वैश्विक समृद्ध इतिहास प्रेरणा का केंद्र बना हुआ है। इस तपोस्थली में विभिन्न प्रकार के मनुष्यों ने अनेक प्रकार के प्रौद्योगिकियों और नाना प्रकार के ज्ञानवर्धक आविष्कारों को प्रस्थापित किया है। आध्यात्मिकता, धर्म और दर्शन के अपने समृद्ध इतिहास के कारण, भारत को कभी-कभी सांस्कृतिक या आध्यात्मिक अर्थों में "विश्व गुरु" के रूप में जाना जाता है। भारत हिंदू धर्म, बौद्ध धर्म, जैन धर्म और सिख धर्म जैसी कई आध्यात्मिक और धार्मिक परंपराओं का जन्मस्थान और सीखने का केंद्र रहा है। इतिहास के पन्नो में भारत को विश्व गुरु यानी की विश्व को पढ़ाने वाला अथवा पूरी दुनिया का शिक्षक कहा जाता था, क्योंकि भारत देश की प्राचीन अर्थव्यवस्था, राजनीति और यहाँ के लोगों का ज्ञान इतना सम्रद्ध था कि पूर्व से लेकर पश्चिम तक के सभी देश भारत का व्याख्यान करते कभी नहीं थकते थे। भारतीय संस्कृति बहुत बड़ी है और इसमें गुरु बनाने की परंपरा भी बहुत पुरानी रही है। प्रत्येक व्यक्ति अपने जीवन में एक गुरु अवश्य बनाता है ताकि वे गुरु उनके जीवन को नई सकारात्मक दिशा दिखा सके जिस पर चलकर व्यक्ति अपने जीवन को सफल व सुखमय बना सके एवं मोक्ष प्राप्त कर सके। इसी संदर्भ में गुरु की महत्ता को बताते हुए परमेश्वर कबीर जी कहते हैं कि:

गुरु बिन माला फेरते, गुरु बिन देते दान।

गुरु बिन दोनों निष्फल हैं, पूछो वेद पुराण।।

विवेचनात्मक अध्ययन:

भारतीय ज्ञान परंपरा हजारों वर्ष पुरानी है जिसकी सनातन संस्कृति अनादिकाल से विद्यमान हैं। यहाँ के ज्ञान परंपरा, ज्ञान विज्ञान, तकनीकी आयुर्वेद, प्रबंधन, राजनीति, गणित, अभियांत्रिकी आदि सभी क्षेत्रों का खजाना है। आज विश्व विभिन्न प्रकार की समस्याओं से जूझ रहा है जिससे मानवीय मूल्यों के लोप हो चुका हैं। संपूर्ण विश्व प्राकृतिक एवं जैविक संसाधनों के संकट को झेल रहा है। भारतीय वेदों, उपनिषदों में वर्णित पंचमहाभूत संकट का प्रकोप विकराल रूप धारण कर चुका है, वही विश्व के बहुत से देश जल संकट से जूझ रहे है। यह स्थिति भारतीय महाद्वीप के दक्षिणी क्षेत्रों में भी देखने को मिल रही है, भूमि, वायु, जल प्रदूषण एक सामान्य समस्या बन गई है। आए दिन अग्नि प्रकोप का समाचार भी पढ़ने को मिलता है, ओजोन क्षरण, विभिन्न प्रकार के नए विषाणु का प्रकोप विनाश का संकेत दे रहा है, जिसका एकमात्र कारण आधुनिकता में अतिशय तकनीक प्रयोग है। ऐसे में पांच तत्वों को पूजने वाले भारतीय ज्ञान परंपरा की ओर ध्यान आकृष्ट होना अवश्यंभावी हो जाता है। भारतीय वैदिक संस्कृति में सदैव वृक्षों को देवता माना गया है, वृक्षों की आराधना मानव का परम कर्तव्य स्वीकार किया गया है। वृक्ष, जल तथा पृथ्वी की रक्षा हेतु अथर्ववेद में निर्देश दिए गए हैं। आधुनिक समय में बढ़ते पर्यावरणीय संकट का एकमात्र समाधान वृक्षारोपण ही है और यह निर्विवाद सत्य है कि विश्वव्यापी पर्यावरणीय संकट का समाधान हमारे वेदों में ही है। वेद ऐसे कर्म करने का निर्देश देते हैं जो अनुशासित जीवन जीने के लिए आवश्यक है अतः आधुनिक समय में भारतीय परंपरा के अनुसार कर्म स्वीकार करना चाहिये। आधुनिक मानव तनाव की स्थिति में है जिसका कारण सहयोग, प्रेम, सामंजस्य की कमी तथा प्रतियोगिता की अधिकता है, इसका समाधान भी भारतीय वेदों और उपनिषदों में है। भारतीय ज्ञान वसुधैव कुटुम्बकम के दर्शन पर आधारित है जो मानव को प्रेम सहयोग और सबको समान समझने का निर्देश देते हैं। आज रूस -यूक्रेन, इजरायल, ईरान, अफगानिस्तान बांग्लादेश, श्रीलंका, पाकिस्तान, जापान जैसे देशों में युद्ध की स्थिति देखकर तो भारतीय ज्ञान परंपरा की प्रासांगिकता और भी समीचीन लगती है। भारतीय दर्शन शांति का संदेश देता है, विश्व शांति का आह्वान करता है। तकनीक और प्रौद्योगिकी के क्षेत्र में भी भारतीय ज्ञान परंपरा में अभी बहुत सी ऐसी तकनीक है जिसपर अनन्य शोध करने की आवश्यकता है, जो आधुनिक जीवन में अधिक प्रासंगिक साबित होंगी। विश्व मानव शक्ति एक व्यापक संकल्पना है जिसमें विभिन्न तत्वों का संश्लेषण है। भारतीय ज्ञान परंपरा विश्व मानव शक्ति के तत्वों के समाहित भी हुए हैं। भारतीय दर्शन का अंतिम उद्देश्य से मानव को संचालित कर वर्षों से मुक्त कर प्राणी जगत को संचालित करना है। भारतीय ज्ञान परंपरा के अंतर्गत मनुष्य को आत्म साक्षात्कार के करना है। इन मानवीय मूल्यों ने सामाजिक समरसता स्थापित कर प्रत्येक मनुष्य का संपूर्ण विकास करने में अग्रणी है। जो अंतिम सत्य के मार्ग को प्रशस्त करता है। इस प्रकार भारतीय ज्ञान परंपरा विश्व मानव शक्ति से सरोकार करने में अद्वितीय भूमिका निभाती है।

निष्कर्ष व सुझाव:

भारतीय ज्ञान परंपरा का दर्शन मूलतः विश्व कल्याणकारी दर्शन है। यहाँ की संस्कृति संपूर्ण प्राणी जगत को एक परिवार के रूप में देखती है और सभी के कल्याण की कामना करती हैं। भारतीय ज्ञान परंपरा "सर्वे भवंतु सुखिनः" के ध्येय पर आधारित है। जिसने दर्शन, व्याकरण, अर्थशास्त्र, विज्ञान, आयुर्वेद, ज्योतिष, कला- संगीत के क्षेत्र में अद्भुत कीर्तिमान स्थापित कर मानव प्रगति में अत्यधिक योगदान दिया है। आधुनिक विज्ञान तकनीक में प्राचीन भारतीय तकनीक का महत्वपूर्ण योगदान रहा है, यहाँ की प्रौद्योगिकी इतनी विकसित रही है कि अभी भी शोध का विषय बनी है। विश्व में गुरु- शिष्य परंपरा भारतीय ज्ञान परंपरा की ही देन हैं।

निष्कर्ष:

- भारतीय ज्ञान परंपरा की प्रसांगिकता वर्तमान युग में भी बनी हुई हैं। यह परंपरा मनुष्य को अनुशासन सिखाती है। मानव को तनाव और द्वंद से बचने के लिए व्यावहारिक समाधान देती हैं। भारतीय परंपरा उत्कृष्ट विचारों और समृद्ध ज्ञान का भंडार है जिसका उपयोग समाज, समुदाय और विश्व के लिये किया जाना चाहिए जो विश्व मानव शक्ति के भाव को स्थापित करें।
- भारतीय समृद्ध ज्ञान का व्यापक स्तर पर विभिन्न क्षेत्रों में प्रयोग किया जाना चाहिए ताकि भावी पीढ़ी के लिए संरक्षित किया जा सके।
- भारतीय दर्शन में सभी प्राणियों में मानव को श्रेष्ठ माना गया है अतः भारतीय समृद्ध विज्ञान विरासत का प्रयोग कर मानव कल्याण को संपोषित किया जाना चाहिए।

संदर्भ ग्रंथ सूची:

- गुप्त, अदित्य कुमार(2019), भारतीय दर्शन एवं मानव कल्याण : एक अवलोकन, शोध मंथन, ISSN (P): 0976-5255€: 2454-339X Vol,X No.11, pp 591-596.
- Bajpai, Nitin. (2024). राष्ट्रीय शिक्षा नीति-2020: ग्रामीण भारत की शिक्षा की दशा और दिशा. 5. 250-25.
- Baral, S. (2024) Integrating Indian Knowledge Systems for Holistic Development through NEP 2020.
- Das, R. K. (2024). Indian Knowledge System and National Education Policy (Nep) 2020. *Integrated Journal for Research in Arts and Humanities*, *4*(4), 47-51.
- Harrison, D. (2003). The sociology of modernization and development. Routledge.

- Khan, S., & Sharma, M. (2024). An Overview on Indian Knowledge System. Integrated Journal for Research in Arts and Humanities, 4(4), 42–46.
- Mandavkar, Pavan. (2023). Indian Knowledge System (IKS). SSRN Electronic Journal. DOI 10.2139/ssrn.4589986.
- THAKKAR, M. N. R. (2024). A Vision for 2047: The Indian Knowledge System and Education for a Viksit Bharat. Vidhyayana-An International Multidisciplinary Peer-Reviewed E-Journal-ISSN 2454-8596, 9(si2).
- Thapliyal, Poonam. (2023). Indian Knowledge Systems in the Curriculum of Higher Education: A Proposed Model of a PG Course in IKS. International Journal of Research Publication and Reviews,4.3296-3301.10.55248/gengpi.4.823.49938.10.
- Tiwari, Sandhya. (2023). Indian Knowledge System (IKS) as a Significant Corpus of Resources Useful for Personal and Professional Development. 12. 191-200. 10.35629/7722-1209191200.
- Patel, Sarjoo & Veerkumar, Vashima & Smita, Ms. (2024). IMPLEMENTATION OF INDIAN KNOWLEDGE SYSTEM IN FIRST YEAR CURRICULUM OF FACULTY OF FAMILY AND COMMUNITY SCIENCES ACCORDING TO NEP.
- गुप्त, अदित्य कुमार(2019), भारतीय दर्शन एवं मानव कल्याण : एक अवलोकन, शोध मंथन, ISSN (P): 0976-5255€: 2454-339X Vol,X No.11, pp 591-596.
- Watson, J., Lysonski, S., Gillan, T., & Raymore, L. (2002). Cultural values and important possessions: a cross-cultural analysis. *Journal of Business Research*, *55*(11), 923-931.